International Indexed & Referred Research Journal, March, 2012. ISSN- 0975-3486, RNI-RAJBIL 2009/30097;VoL.III *ISSUE-30

शोध पत्र– हिन्दी

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का समाज मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

* डॉ. फिरोजा जाफर अली

* सहायक प्राध्यापक हिन्दी, कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाईनगर, छतीसगढ़

March, 2012

विश्व की प्रायः हर जाति और हर क्षेत्र में लोकगीत पाये जाते हैं। लोकगीतों की परंपरा अत्यंत प्राचीन एवं व्यापक है। आफ्रीका, अमेरिका, यूरोप, आइसलैण्ड, इंग्लैण्ड, फिनलैण्ड, जापान, फ्रांस आदि देशों के लोकगीतों में एकसूत्रता तथा विषय विविधता का गरिमामय इतिहास है। लोकगीत सारे संसार में पाये जाते हैं परंतु कुछ लोगों का मानना है कि लोकगीतों के लिये भारत ही सर्वाधिक उपजाऊ भूमि है। भारत में लोकगीतों की परंपरा प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद से है। "भारत के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में विभिन्न स्थानों में गाथा शब्द आया है जो कि पद्य या गीत के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है"[1]।

वर्तमान लोकगीतों का सूत्र ऋग्वेद से सम्बंधित है। वैदिक काल से लोकगीतों की गंगा अबाध रूप से बह रही है। मौखिक और अलिखित लोकसाहित्य, परम्परा और संस्कृति का व्यवहारिक लोकशास्त्र है। अनुभव सिद्ध लोकसूत्र मानव जीवन के अनुभवों की गाथा है। यही अनुभव विभिन्न अवसरों पर रागात्मक लय में अनायास ही फूट पड़ते हैं।

लोक साहित्य की भावना हृदय को छु लेने वाली तथा सरस एवम् सहज होती है। अपरिष्कृत शिल्प के साथ लोकगीत विभिन्न संदर्भों में हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं। मार्मिक अनुभूति की लयबद्धता समाज के विभिन्न अन्तर्सम्बंधित पक्षों को समेट लोकसंस्कृति को संरक्षित करती है। लोकसाहित्य की विभिन्न विधा, लोक कथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, लोक सुभाषित की तरह लोकगीत, लोक साहित्य के शिष्ट पक्षों को उद्घाटित करता है। भावनाओं का उद्गार जब अंतःकरण से प्रस्फुटित होकर लयबद्धता के साथ मुखरित होता है तो वह प्राचीनता के साथ नवीनता का तथा नवीनता के साथ प्राचीनता का समावेश करता है।

लोकगीत के महत्व को प्रतिपादित करते हुए डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं – "ईट–पत्थर के प्रेमी विद्वान यदि धृष्टता न समझें तो जोर देकर कहा जा सकता है कि ग्रामगीत का महत्व मोहन जोदड़ो से अधिक है। मोहन जोदड़ो के भग्न ग्राम–गीत भाष्य का काम दे सकते हैं"[2]।

मानव जीवन के विभिन्न आयाम जिनमें कभी वह रोता है, हँसता है, धार्मिक अनुष्ठान करता है, श्रम के क्षणों में थकान से चूर होता है, सामाजिक कार्यों के निर्वहन के समय संपूर्णता के साथ जटिलताओं के मध्य, अपनी भावभूमि को लोकगीतों से मधुर और बोधगम्य बनाता है। भावनाओं को संगीतमय लयात्मकता प्रदान कर मनुष्य आदिम अवस्था से ही गीतों की शाब्दिक अभिव्यक्ति में रत् है। लोकगीतों को इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में परिभाषित करते हुए कहा गया है – "लोकगीत न नवीन होते हैं न प्राचीन ये तो जंगल में स्वयं अंकुरित होने वाले जंगली वृक्ष के समान होते हैं, जिनकी जड़ें सुदूर अतीत में मिलती हैß[3]।

लोकगीतों की भाषा अनगढ़ अलंकार रहित होते हुए रसास्वादन के वैशिष्ट्य के कारण काव्य का अनुपम आस्वादन कराते हैं हृदय के अंतकरण से प्रस्फुटित गीत कोयल की कूक की तरह होती है जिसे सुनकर मन मयूर नाच उठता है। डॉ. सत्यगुप्त लोकगीतों के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहते हैं "इन गीतों में न कला है, न भाषा–सौष्ठव। ये गीत तपते सूर्य के नीचे खेतों में काम करते हुए लोकमानस ने गाया है। चूल्हे पर कसार भूनती तथा दीपक जलाती नारी ने गुनगुनाये हैं, जिस पर अंतर का जो भी स्पर्श कर पाया, तुरंत वही भाव बोलचाल की भाषा में गीत बनकर फूट पड़ा हैÞ[4]।

छत्तीसगढ़ी समाज का सबसे बड़ा भंडार यहाँ की विभिन्न जातियों के द्वारा संग्रहित लोकगीत है। छत्तीसगढ़ी लोकगीत यहाँ की सामाजिक व्यवस्था की देन है। ग्राम्य–गीतों की प्रधानता का मुख्य कारण छत्तीसगढ़ का प्राकृतिक वैभव है। प्रकृतिजन्य वातावरण यहाँ के जन–जीवन को आनन्द से भर देती है। प्राकृतिक वैभव से युक्त लोक गीत का संसार अद्भुत और विशाल है। प्रकृति और छत्तीसगढ़ी लोकजीवन दोनों में आश्चर्यजनक सामंजस्य है। अतीत की गौरवगाथा के साथ लोकगीत छत्तीसगढ़ की भूमि को काव्यात्मक बनाए रखती है। लोकगीत के प्रस्फुटन में प्रकृति उद्दीपन का कार्य करती है। ykxk dh eukofÙk vkj lkekftd okrkoj.k nkuk feydj lekt eukfoKku dk fuek.k djrs gSA

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की समाज मनोवैज्ञानिक अध्ययन से पहले छत्तीसगढ़ी समाज की संरचना एवं लोकगीतों के वर्गीकृत रूप को समझना आवश्यक है।

छत्तीसगढ़ की स्वयं अपनी गरिमामय परम्परा और विभिन्न आयामों पर विशिष्ट धारणाएँ हैं। सोचने का ढंग, रहने का सलीका जीवनयापन की विधि भी अलग है। संघर्षों से जूझते छत्तीसगढ़ नवगठित राज्य बनने के बाद अपने अंदर समाहित हीनता बोध को दूर करने में लगा है। स्वतंत्रता और समानता का प्रबल पक्षधर छत्तीसगढ़, स्त्री–पुरुष समानता को स्वीकार करता है। सार्वभौमिक स्तर पर लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या की जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि गीतों के पुनर्मूल्यांकन में,

प्रेरणा में, आकृष्टि में हमारी सामाजिक राष्ट्रीयता जुड़ी हुई है। जैसे–जैसे हमारा शिष्ट समाज दासता से मुक्त होते जा रहा है वैसे–वैसे हम अपने मूल्यों की ओर लौटते जा रहे हैं। लोकगीतों के संग्रहण का कार्य लोकसाहित्य में सबसे अधिक हुआ है। लोकगीतों में वैयक्तिकता के साथ सामूहिक दृष्टिकोण को भी महत्व मिला। समाज की इकाई व्यक्ति है और व्यक्ति की आवाज को गीतों ने मुखरता प्रदान किया है। समाज मनोवैज्ञानिक अध्ययन में सामाजिक तत्वों का प्राधान्य को आधार बनाया जा सकता है। लोकगीतों में हर्ष, उमंग से भरे हुये मनुष्य की भावना तथा कुंठाओं से मुक्ति का भाव मिलता है। गीतों के माध्यम से समाज कुंठाओं से भी मुक्ति पाता है, गीतों का सृजन होने से मन की विभिन्न प्रवृत्तियों का उन्मुलन होता है।

xhr lkekftd eukfpdRlk g| यदि गीतकार मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में कुशल है तो गीत और अधिक भाव प्रधान होते हैं। समाज मनोवैज्ञानिक अध्ययन में एक व्यक्ति को किसी सामाजिक समूह या समूहों के साथ अंतःक्रिया या होने वाली प्रतिक्रिया का अध्ययन करना होता है। मनुष्य और समाज एक–दूसरे के पूरक हैं। सामाजिक मूल्य, परंपराओं, मान्यताओं रीति–रिवाजों से मिलकर बनता है, यही मूल्य जीवन मूल्य का रूप धारण कर मनुष्य के जीवन व्यवहार को प्रभावित करते हैं। छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में सामुदायिकता, आत्मप्रकाशन, मानव प्रकृति आदि के गुण पाये जाते हैं। सामाजिक अंतःक्रिया, सामूहिक आदान–प्रदान, व्यवहार तत्व, सामाजिक अभिप्रेरणा आदि छत्तीसगढ़ी लोकगीतों को समाज – मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए आधार प्रदान करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1.कण्व इन्द्रस्य गाथया – ऋग्वेद, 8–32–1 2.छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का परिचय – भयामाचरण दुबे (भूमिका) 3. इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका – आर. विलियन्सव्हाल्यूम, पृष्ठ 4554. खड़ी बोली का लोक साहित्य – डॉ. सत्येंद्र, पृष्ठ 4–5